No. of Printed Pages : 4

एम.एच.डी.-4

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

07981

दिसम्बर, 2018

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

1. निम्नलिखित में से किन्हीं ***तीन*** की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) समष्टि में भी व्यष्टि रहती है । व्यक्तियों से ही जाति बनती है । विश्व-प्रेम, सर्वभूत-हित-कामना परम धर्म है, परंतु इसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि अपने पर प्रेम न हो, इस अपने ने क्या अन्याय किया है जो इसका बहिष्कार हो ?

(ख) अपनी ज़िंदगी चौपट करने का ज़िम्मेदार मैं हूँ । तुम्हारी ज़िंदगी चौपट करने का ज़िम्मेदार मैं हूँ । इन सबकी ज़िंदगियाँ चौपट करने का ज़िम्मेदार मैं हूँ । फिर भी मैं इस घर से चिपका हूँ क्योंकि अंदर से मैं आराम-तलब हूँ, घर-घुसरा हूँ, मेरी हड्डियों में ज़ंग लगा है ।

(ग) मैं दो बड़े पहियों के बीच लगा हुआ
एक छोटा निरर्थक शोभा-चक्र हूँ
जो बड़े पहियों के साथ घूमता है
पर रथ को आगे नहीं बढ़ाता
और न धरती ही छू पाता है !
और जिसके जीवन का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है
कि वह धुरी से उतर भी नहीं सकता !

(घ) याज्ञवल्क्य ने जो बात धक्कामार ढंग से कह दी थी वह अंतिम नहीं थी । वे 'आत्मनः' का अर्थ कुछ और बड़ा करना चाहते थे । व्यक्ति की 'आत्मा' केवल व्यक्ति तक सीमित नहीं है, वह व्यापक है । अपने में सब और सबमें आप – इस प्रकार की एक समष्टि-बुद्धि जब तक नहीं आती तब तक पूर्ण सुख का आनंद भी नहीं मिलता ।

(ङ) ठकुरी बाबा को देने में एक विशेष प्रकार की आनंदानुभूति होती है, इसी से वे स्वयं पूछ-पूछकर इस विनिमय व्यापार को शिथिल होने नहीं देते । वे भावुक और विश्वासी जीव हैं । चिकारा हाथ में लेते ही उनके लिए संसार का अर्थ बदल जाता है । उनकी उदारता, सहज सौहार्द, सरल भावुकता आदि गुण ग्रामीण जीवन के लक्षण होने पर भी अब वहाँ सुलभ नहीं रहे । वास्तव में गाँव का जीवन इतना उत्पीड़ित और दुर्वह होता जा रहा है कि उसमें मनुष्यता को विकास के लिए अवकाश मिलना कठिन है ।

2. राजनीतिक प्रहसन के रूप में 'अंधेर नगरी' नाटक की विवेचना कीजिए । *16*

3. 'स्कंदगुप्त' की ऐतिहासिकता और वर्तमान प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए । *16*

4. 'आधे-अधूरे' नाटक की नायिका की चरित्रगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । *16*

5. नाट्य-शिल्प की दृष्टि से 'अंधायुग' की विवेचना कीजिए । *16*

6. 'लोभ और प्रीति' निबंध की शैलीगत विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए । *16*

7. व्यंग्य निबंध की दृष्टि से परसाई जी के निबंधों की समीक्षा कीजिए । *16*

8. नुक्कड़ नाटक-विधा की दृष्टि से 'औरत' का विवेचन कीजिए । *16*

9. 'संस्कृति और जातीयता' निबंध में व्यक्त विचारों का मूल्यांकन कीजिए । *16*

10. निम्नलिखित में से किन्हीं *दो* पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

(क) एब्सर्ड नाटक और 'ताँबे के कीड़े'

(ख) 'वसंत के अग्रदूत' का भाषिक सौंदर्य

(ग) राहुल जी का यात्रा-वृत्तांत

(घ) 'कलम का सिपाही' के प्रेमचंद

———